गीत

गा

रहे

हैं।

www.rajteachers.com

इसलिये राह संघर्ष की हम चुनें

इसलिये राह संघर्ष की हम चुनें
जिंदगी आँसुओं से नहायी न हो
शाम सहमी न हो रात हो न डरी
भोर की आँख फिर डबडबायी न हो
इसलिये SSSSS इसलिये SSSSS

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे
रोशनी रोशनाई में डूबी न हो
यूँ न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो
आसमाँ में टँगी हो न खुशहालियां
कैद महलों में सबकी कमाई न हो,
इसलिये राह .....

कोई अपनी खुशी के लिये गैर की
हर खुशी छीन ले हम नहीं चाहते
छींट कर थोड़ा चारा कोई उम्र का
हर खुशी बीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिये मखमली बिस्तरा
और किसी के लिये इक चटाई न हो,
इसलिये राह .....

अब तमन्नाएँ फिर ना करें खुदकुशी
ख्वाब पर खौफ की चौकसी न रहे
श्रम के पाँवो में हो न पड़ी बेड़ियाँ
शक्ति की पीठ अब ज्यादती न सहे
दम न तोड़े कहीं भूख से बचपना
रोटियों के लिये फिर लड़ाई न हो
इसलिये राह .....

गीत गा रहे हैं आज हम

गीत गा रहे हैं आज हम
रागिनी को ढूँढ़ते हुए
आ गये यहाँ जवाँ कदम
मंजिलों को ढूंढ़ते हुए

इन दिलों में ये उमंग है
कि जहाँ नया बसायेंगे
जिंदगी का राज आज से
दोस्तों को हम सिखायेंगे
फूल हम नया खिलायेंगे
ताज़गी को ढूँढ़ते हुए, आ गये....

बुरा दहेज का रिवाज है
आज देश में समाज में
है तबाह आज आदमी
लूट पर टिके समाज में
हम समाज भी बनायेंगे
आदमी को ढूँढ़ते हुए आ गये.....

फिर ना रो सके कोई दुल्हन
जोर जुल्म का ना हो निशाँ
मुस्कुरा उठें धरा गगन
हम रचेंगे ऐसी दास्ताँ
हम वतन को यूँ सजायेंगे
रोशनी को ढूँढ़ते हुए आ गये.....

चलो गीत गाओ

चलो गीत गाओ
चलो गीत गाओ
कि गा गा के दुनिया
को सर पर उठाओ

चलो गीत गाओ
सवेरा हुआ है
कि दुनिया में अपना भी डेरा हुआ है
सुरा बेसुरा कुछ ना सोचेंगे आओ
कि जैसा भी सुर पास में है उठाओ
चलो गीत गाओ

अगर गा न पाये तो हल्ला करेंगे
इस हल्ले में मौत आ गयी तो मरेंगे
कई बार मरने से जीना बुरा है
कि गुस्से को हर बार पीना बुरा है
बुरी जिन्दगी को न अपनी बचाओ
कि इज्जत के पैरों पे इसको चढ़ाओ
चलो गीत गाओ

अभागों की टोली का सुर जब चढ़ेगा
तो दुनिया का मालिक नया कुछ गढ़ेगा
भले वह न चेते हमें चेत होगा
हमारा नया घर नया खेत होगा
छिनाये गये को चलो छीन लाओ
कि गा गा के दुनिया को सर पर उठाओ
चलो गीत गाओ

- **भवानी प्रसाद मिश्र**

आदमी

आपको सलाम मेरा सबको राम राम
रे अब तो बोल आदमी का आदमी है नाम

हम गगन तले पले धरा द्के पूत हैं
अग्नि बीज प्राण सलिल पंच भूत हैं
आत्मा अजर अमर है पंच भूत की
मानवी करूण कथा का एक सूत है
हम चमन के फूल हैं हमारा एक धाम
रे अब तो बोल आदमी का आदमी है नाम

इस धरा पे आदमी है ये कमाल है
इस धरा पे आदमी तो बेमिसाल है
जो धरा का प्राण है धरा का धर्म है
आदमी तो आदमी है क्यों सवाल है
आपके रहीम हैं तो आपके हैं राम
रे अब तो बोल आदमी का आदमी है नाम

न्याय की पुकार का गला तो रूँधे है
शब्द बाण भोथरे हैं धार कुंद है
वक्त का सवाल है जवाब कौन दे
भारती की आरती में साफ धुंध है
ये आदमी रहीम है तो आदमी है राम
रे अब तो बोल आदमी का आदमी है नाम

जिंदगी अपनी सजायेंगे

मिल कर हम नाचेंगे गायेंगे
मिल कर हम खुशियाँ मनायेंगे
जिंदगी अपनी सजायेंगे

चिड़ियों से हम चहक ले आयेंगे
महक हम फूलों से लायेंगे
चहकते महकते जायेंगे

चुस्ती हम शेरनी से लायेंगे
फुर्ती हम हिरनी से लायेंगे
शक्ति हम फिर से बन जायेंगे

मौजों से हम मस्ती ले आयेंगे
पर्वत सी हम हस्ती बनायेंगे
आलम हम खुशियों का लायेंगे

जम के हम चीखें चिल्लायेंगे
जुल्मों को हम जड़ से मिटायेंगे
सोतों को हम जा के जगायेंगे

दायरे हम अपने बढ़ायेंगे
बहुतों को हम समझे समझायेंगे
गीत हम दोस्ती के गायेंगे

मिल कर हम नाचेंगे गायेंगे
मिल कर हम खुशियाँ मनायेंगे
जिंदगी अपनी सजायेंगे

अब तो मजहब

अब तो मजहब कोई
ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें हर इंसान को
इंसा बनाया जाये

आग बहती है यहाँ
गंगा में भी झेलम में भी
कोई बतलाये कहाँ
जा कर नहाया जाये. जिसमें .....

जिसकी खुशबू से महक उठे
पड़ौसी का भी घर
फूल ऐसा अपनी बगिया
में खिलाया जाये. जिसमें .....

तेरे दुःख और दर्द का
मुझ पर भी हो ऐसा असर
तू रहे भूखा तो मुझसे
भी न खाया जाये. जिसमें .....

प्यार का खूँ क्यूँ हुआ है
ये समझने के लिये
हर अँधेरे को उजाले
में बुलाया जाये. जिसमें .....

जिस्म चाहे दो हों लेकिन
दिल तो अपने एक हैं
तेरा आँसू मेरी पलकों
से उठाया जाये. जिसमें .....

- **गोपाल दास 'नीरज'**

अपनी दुनिया

चैन गैरों की दुनिया में मिलता नहीं
अपनी दुनिया बसाने का वादा करें

आग अपने ही आँगन को झुलसाये है
अब नये घर बनाने का वादा करें

कैद से छूटने की है ख्वाहिश हमें
कैदखाने जलाने का वादा करें

इल्म को गर अमानत समझते हैं हम
इल्म सबको दिलाने का वादा करें

सेहत दौलत जहाँ में है सबसे बड़ी
अपनी सेहत बनाने का वादा करें

जोर कमजोर पर आजमाते सभी
ताकत अपनी बढ़ाने का वादा करें

दूसरों को बनाने में खाक हुये
किस्मत अपनी बनाने का वादा करें

घर घर बँट कर अँधेरे में घुटते रहे
महफिलें अपनी सजाने का वादा करें

रात तारीक है दिन भी तारीक हैं
बन के सूरज चमकने का वादा करें

रह कर खामोश जुल्मों को सहते रहे
अपनी आवाज उठाने का वादा करें

चैन गैरों की दुनिया में मिलता नहीं
अपनी दुनिया बसाने का वादा करें

हो गयी है पीर

हो गयी है पीर पर्वत सी
पिघलनी चाहिये
इस हिमालय से कोई
गंगा निकलनी चाहिये

मेरे सीने में नहीं तो
तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग लेकिन
आग जलनी चाहिये

सिर्फ हंगामा खड़ा करना
मेरा मकसद नहीं
मेरा मकसद है कि ये
सूरत बदलनी चाहिये

एक चिंगारी कहीं से
ढूँढ लाओ दोस्तों
इस दिये में तेल से
भीगी हुयी बाती तो है

- **दुष्यन्त कुमार**

मैं तुमको विश्वास दूँ

मैं तुमको विश्वास दूँ, तुम मुझको विश्वास दो
शंकाओं के सागर हम लँघ जायेंगे
मरूधरा को मिल कर स्वर्ग बनायेंगे

प्रेम बिना यह जीवन तो अनजाना है
सब अपने हैं कौन यहाँ बेगाना है
हर पल अपना अर्थवान हो जायेगा
बस थोड़ा सा मन में प्यार जगाना है
इस जीवन को साज दो
मौन नहीं आवाज दो
पाषाणों में मीठी प्यास जगायेंगे
मरूधरा को मिल कर स्वर्ग बनायेंगे

अलगावों से आग सुलगने लगती है
उपवन की हर शाख झुलसने लगती है
हर आँगन में सिर्फ सिसकियाँ उठती हैं
संबंधों की साँस उखड़ने लगती है
द्वेष भाव को त्याग दो
बस सबको अनुराग दो
सन्नाटों में हम सरगम बन जायेंगे
मरूधरा को मिल कर स्वर्ग बनायेंगे

ढूँढ सको तो हर माटी में सोना है
हिम्मत का हथियार नहीं बस खोना है
मुस्का दो तो हर मौसम मस्ताना है
बीत गया जो समय उसे क्या रोना है
लो हाथों में हाथ लो
इक दूजे को साथ दो
इस धरती को सोया प्यार जगायेंगे
मरूधरा को मिल कर स्वर्ग बनायेंगे

- **अजीम आजाद**

इस नदी की धार में

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही
लहरों से टकराती तो है

एक चिंगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों
इस दिये में तेल से
भीगी हुयी बाती तो है

एक चादर साँझ ने सारे शहर पर डाल दी
इस अँधेरे की सड़क
उस भोर तक जाती तो है

दुःख नहीं कोई भी अब
उपलब्धियों के नाम पर
और कुछ हो न हो
आकाश सी छाती तो है

निर्वचन मैदान में
लेटी हुयी है जो नदी
पत्थरों से ओट में जा जा के
बतियाती तो है
इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है

- **दुष्यन्त कुमार**

पंखों में आकाश

पंखों में आकाश समेटे
चले हमारा काफिला
मन में इक विश्वास संजोये
चले हमारा काफिला

नई सोच का नया जोश गर
आ जाये इन बाहों में
नई उमंगे नई रवानी
रम जाये इन श्वासों में
नये स्वप्न की धड़कन ले कर
चले हमारा काफिला
मन में इक विश्वास संजोये
चले हमारा काफिला

श्रम की पूजा करने वाले
निश्चित पा जाते मंजिल
फौलादी गर बने इरादे
कोई काम नहीं मुश्किल
रंगों का इक इंद्रधनुष ले
चले हमारा काफिला
मन में इक विश्वास संजोये
चले हमारा काफिला

नील गगन में उड़ने वाले
पंछी नया सवेरा है
बरसे मोती आँगन आँगन
पल पल रूप सुनहरा है
नूतन मृदु उल्लास लिये
चले हमारा काफिला
मन में इक विश्वास संजोये
समेटे चले हमारा काफिला

होंगे कामयाब

होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन,
हो, हो..... मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन.

हम चलेंगे साथ-साथ, डाले हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन,
हो, हो..... मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन.

नहीं डर किसी का आज,
नहीं डर किसी का आज,
नहीं डर किसी का आज के दिन,
हो, हो..... मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन.

- **मार्टिन लूथर किंग**
- **अनुवाद : गिरिजा कुमार माथुर**

हमारे वतन की

हमारे वतन की नयी जिन्दगी हो
नयी जिन्दगी इक मुकम्मल खुशी हो
नया हो गुलिस्तां नयी बुलबुलें हो
मुहब्बत की कोई नयी रागिनी हो
न हो कोई राजा न हो रंक कोई
सभी से बराबर सभी आदमी हो.
हमारे वतन.....
नहीं हथकडी कोई फसलों का डाले
हमारे दिलों की न सौदागरी हो
जुबानों पे पाबंदियाँ हो न कोई
निगाहों में अपनी नयी रोशनी हो.
हमारे वतन.....
न अश्कों से नम हो किसी का भी दामन
नहीं कोई भी कायदा हिटलरी हो
सभी होंठ हो आजाद महफिलों में
कि गंगो जमन जैसी दरियादिली हो.
हमारे वतन.....
नये फैसले हो नयी कोशिशें हो
नयी मंजिलों की कशिश नयी हो
हमारे वतन की नयी जिन्दगी हो
नयी जिन्दगी इक मुकम्मल खुशी हो

- **गोरख पांडेय**

नये गगन में

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
नया सूर्य जो चमक रहा है नये गगन में
ये विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें
मेरी भी आभा है इसमें

भीनी भीनी खुशबू वाले रंग बिरंगे ये जो
इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था
पकी सुनहली फसलों से जो अबकी ये
खलिहान भर गया
मेरी रग रग के शोणित की बूँदे इसमें
मुस्काती है

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
नया सूर्य जो चमक रहा है नये गगन में
ये विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें
मेरी भी आभा है इसमें

- **नागार्जुन**

दुनिया वालों

दुनिया वालों ओ दुनिया वालो
छोटे से सवाल का
जुल्म के फैले जाल का
इंसा के इस हाल का जवाब दो

दुनिया वालों जवाब दो-2
हाथों में हथियार क्यों
देशों में दीवार क्यों
नहीं दिलों में प्यार क्यों जवाब दो .....

भूल गये सब प्यार की बोली
चलन चला है गोली का
हर दामन पर लगा हुआ है
रंग खून की होली का
कोई हमसे ये तो बता दे
निर्दोषों पर वार क्यों
इतना अत्याचार क्यों
नहीं दिलों में प्यार क्यों. जवाब दो .....

बारूदों की बरसातों में
पागल धरती रोती है
चाहे कहीं भी गोली चले
माँ की ममता रोती है
बहन ढूँढती है भाई को
माँ से बिछड़ा लाल क्यों
दुल्हन का यह हाल है
तुमसे यह सवाल है जवाब दो .....

तुमने विजेताओं को देखा
देखा मरते जवानों को
मरते इंसानों को SSSSSSSS
जीत के पीछे जलते हैं
जो देखो इन को
उजड़े घर ये पूछे
कहाँ गयी आबादियाँ
माँगी थी आजादियाँ
मिली हमें बरबादियाँ. जवाब दो .....

पोंछ कर अश्क

पोंछ कर अश्क अपनी आँखों से
मुस्कुराओ तो कोई बात बने
सर झुकाने से कछ नहीं होता
सर उठाओ तो कोई बात बने

जिन्दगी भीख में नहीं मिलती
जिन्दगी लड़ के छीनी जाती है-2
अपना हक संग दिल जमाने से
छीन पाओ तो कोई बात बने. पोंछ कर....

रंग और नस्ल जात औ' मजहब
जो भी हो आदमी से कमतर है-2
इस हकीकत को तुम भी मेरी तरह
जान पाओ तो कोई बात बने. पोंछ कर....

सूरज अगर ढलता नहीं

सूरज अगर ढलता नहीं
तो पूरब उसे मिलता नहीं
जो प्राण ना तजता मनुज
तो जीवन नया मिलता नहीं.

यूँ सूर्य के भी सामने
आ जाते हैं बादल कभी,
और चाँद के मुख चँद्र पर
पुत जाती है कालिख कभी
कि अपयश बिना भोगे कभी
सम्मान भी मिलता नहीं. सूरज अगर ....

है राह जो सबके लिये
उस राह पर काँटे न बो
दो-चार दिन सबके लिये
इंसानियत अपनी न खो
कि पाषाण पर रोपा गया
पौधा कभी फलता नहीं. सूरज अगर ....

पा कर दया की भीख जो
गिर कर जिये तो क्या जिये
असहाय पर उपकार जो
गिन कर किये तो क्या किये
तो जीवंत है जिसका अहं
वो दान भी फलता नहीं. सूरज अगर ....

लड़ने की है हिम्मत अगर
तो समझौते फिर हम क्यों करें,
बढ़ने की हो क्षमता अगर
तो अवरोध से क्यों हम डरें
कि सामर्थ्य है तो क्यों कहें
विधि का लिखा टलता नहीं. सूरज अगर.

चलते चलो आ जायेगी
मंजिल कभी खुद सामने
है जो लगन तो खुद पाओगे
साहिल कभी तुम सामने
कि संकल्प है इंसान का
सोचा हुआ टलता नहीं. सूरज अगर ....

आकाश गंगा

आकाश गंगा सूर्य चंद्र तारा
संध्या उषा किसी के नहीं

किसकी भूमि किसकी नदी
किसकी सागर धारा
भेद केवल शब्द हमारा तुम्हारा. आकाश
..

वही हास्य वही रूदन
आशा निराशा वही मानव उर्मि
लेकिन भिन्न भाषा. आकाश ..

इंद्र धनुष के अंदर
ना होती कभी जंग
सुंदरता के लिये
बने विविध रंग. आकाश ..

- वाचा प्रस्तुति

कि जैसे चाँद आकर

कि जैसे चाँद आकर
चाँदनी के फूल बरसाता
कि जैसे मेघ आ सबके
घड़ों में नीर भर जाता
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का.–3

कि जैसे भोर का सूरज
धरा में रंग भरता है
कि जैसे फूल खिल कर के
हवा में गंध भरता है,
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का.-3

कि जैसे गोद में खेतों के
कलियाँ लहलहाती है
कि जैसे काम कर मजदूर
गाना गुनगुनाता है
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का.-3

कड़ी मेहनत से ही
इंसान का चेहरा चमकता है
कि सोना आग में तप कर
ही कुंदन सा दमकता है
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का.-3

हम लोग हैं ऐसे दीवाने

हम लोग हैं ऐसे दीवाने
दुनिया को बदल कर मानेंगे
मंजिल को पाने आये हैं
मंजिल को पा कर मानेंगे,

हर माँग हमारी पूरी हो
उस वक्त तसल्ली पायेंगे
ऐसे तो नहीं टलने वाले
हम लड़ते ही मर जायेंगे
हाँ हम भी किसी से कम तो नहीं
तूफान उठा कर मानेंगे
मंजिल को .....

सच्चाई की खातिर दुनिया में
बापू ने भी गोली खायी थी
ईसा भी चढ़े थे सूली पर
सुकरात ने जान गँवाई थी
यूँ हम भी किसी से कम तो नहीं
तकदीर बदल कर मानेंगे
मंजिल को .....

दो दिन की बहारें है जग में
जब जुल्म किसी का चलता है
हर जुल्म का सूरज लाख उगे
हर रात को लेकिन ढलता है
नफरत के शोले दिल में है
हम उन्हें बुझा कर मानेंगे
मंजिल को .....

मंदिर मस्जिद

मंदिर मस्जिद गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को -2

हिन्दू कहता मंदिर मेरा
मंदिर मेरा धाम है
मुस्लिम कहता मक्का मेरा,
अल्ला का ईमान है
दोनों लड़ते लड़ मरते
लड़ते लड़ते खत्म हुये
दोनों ने इक दूजे पे
ना जाने कैसे जुल्म किये
किसका ये मकसद है
किसकी चाल है ये जान लो
धरती बाँटी .....

नेता ने सत्ता की खातिर
कौमवाद से काम लिया
धर्म के ठेकेदार से मिल कर
लोगों को नाकाम किया
भाई बँटे टुकड़े टुकड़े में
नेता का है मान बढ़ा
वोट मिले और नेता जीता
शोषण को आधार मिला
वक्त नहीं बीता है अब भी
वक्त की कीमत जान लो
धरती बाँटी .....
प्रजातंत्र में प्रजा को लूटे
ये कैसी सरकार है
लाठी गोली ईश्वर अल्ला
ये सारे हथियार हैं
इनसे बचो और बच के रहो
और लड़ कर इनसे जीत लो
हक है तुम्हारा चैन से रहना
अपने हक को छीन लो
अगर हो शैतानी से तंग तो
खत्म करो शैतान को
धरती बाँटी .....

- **विनय महाजन**

बेटी हूँ मैं बेटी

बेटी हूँ मैं बेटी मैं तारा बनूँगी
तारा बनूँगी मैं सहारा बनूँगी

गगन पर चमके चंदा मैं
धरती पर चमकूंगी
धरती पर चमकूँगी मैं,
उजियारा करूँगी. बेटी.....

पढ़ूँगी लिखूँगी मैं
मेहनत भी करूँगी
मेहनत भी करूँगी मैं,
जलवा दिखाऊँगी. बेटी.....

अपने पाँव चल कर
दुनिया को देखूँगी
दुनिया को देखूँगी मैं,
निया को समझूँगी. बेटी.....

- **वाचा प्रस्तुति**

एक हमारी और इक उनकी

एक हमारी और इक उनकी
मुल्क में है आवाजें दो
अब तुम पर है कौन सी
तुम आवाज सुनो तुम क्या मानो

हम कहते हैं जाति धर्म से
इंसा की पहचान गलत
वो कहते हैं सारे इंसा
एक है ये एलान गलत

हम कहते हैं नफरत का जो
हुक्म दे वो फरमान गलत
वो कहते हैं ये मानो तो
सारा हिन्दुस्तान गलत

हम कहते हैं भूल के नफरत
प्यार की कोई बात करो
वो कहते हैं खून खराबा
होता है तो होने दो

हम कहते हैं इंसानों में
इंसानों सा प्यार रहे
वो कहते हैं हाथों में
त्रिशूल रहे तलवार रहे

हम कहते हैं बेघर बेदर
लोगों को आबाद करो
वो कहते हैं भूले बिसरे
मंदिर मस्जिद याद करो

एक हमारी और इक उनकी
मुल्क में है आवाजें दो
अब तुम पर है कौन सी तुम
आवाज सुनो तुम क्या मानो

▪ **जावेद अख्तर**

तू जिन्दा है

तू जिन्दा है तो जिन्दगी की
जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो
उतार ला जमीन पर

ये गम के और चार दिन
सितम के और चार दिन
ये दिन भी जायेंगे गुजर
गुजर गये हजार दिन
कभी तो होगी इस चमन
पे भी बहार की नजर. अगर.....

सुबह और शाम के रंगे हुये
गगन को चूम कर
तू सुन जमीन गा रही है
कब से झूम झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर
तू आ मुझे हसीन कर. अगर.....

हजार भेष धर के आयी
मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे ना छल सकी
चली गयी वो हार कर
नई सुबह के संग तुझे
मिली सदा नयी उमर. अगर.....

हमारे कारवाँ को
मंजिलों का इंतजार है
ये आँधियों ये बिजलियों
की पीठ पर सवार है
तू आ कदम मिला कर चल
चलेंगे एक साथ हम. अगर.....

जमीं के पेट में पली
अगन पले हैं जलजले
टिके न टिक सकेंगे भूख
रोज के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल
चलेंगे एक साथ हम. अगर.....

बुरी है आग पेट की
बुरे हैं दिल के दाग ये
न दब सकेंगे एक दिन
बनेंगे इंकलाब ये
गिरेंगे जुल्म के महल
बनेंगे फिर नवीन घर. अगर.....

- **शैलेन्द्र**

साथ चलेंगे साथी

साथ चलेंगे साथी, साथ साथ चलेंगे
साथ चलेंगे साथी, साथ साथ चलेंगे.

चाँद में, सूरज में, पश्चिम में, पूरब में
सड़कों पे, खेत में, जंगल में, रेत में.

पाक से हिंद तक, गंगा से सिंध तक
ऊँचे पहाड़ में, बाघ की दहाड़ में.

मरने में, जीने में, खाने में, पीने में
मेहनत से, त्याग से, चोटी से, प्रयाग से.

पुलों पर, राहों पे, धूप में, छाँव में,
फूलों में, चाँदनी में,चिड़ियों की रागिनी में.

रोने में, हँसने में, आजादी में, फँसने में
बोने में, काटने में, खाइयों के पाटने में.

भाषण से, गोष्ठी से, झगड़े से, दोस्ती से
तिल तिल चलेंगे साथी मंजिल तय करेंगे.
चिट्ठी लिखेंगे, उठेंगे-बैठेंगे,
विचार तो मिले हैं साथी दिल भी मिलेंगे.

कुकड़ू कुकड़ू चाल

तू कुकड़ू कुकड़ू चाल मारी मुर्गी
कुकड़ू रे कुकड़ू चाल

थानै मिले आज रा नेता,
थारै कंठ छुरी धर देता,
थानै मिल जाये अफसरशाही,
वो बाँट चूँट कर खाई,
थानै मिल जाये वर्दी खाकी,
वो निगलै रे आखी आखी
लागरिया पाछै थारै पाँखड़ी उखाड़ बानै
थारी पत राखै गोपाल.
तू कुकड़ू.....

मँहगाई के मारे मुर्गी मिले नहीं दाना
भाटा ही पड़ेगा थानै पेट में पचाना
काम करताँ करताँ थारी बीतगी जवानी
थारा पिचका पिचका गाल
तू कुकड़ू.....

थारी पूँछ ने खींचे अल्ला
मूँडा पे राम का हल्ला
गाँव वाला भी पाछै लागै
तू कठीने बच कर भागै
तू नाड़ उठा कर चालै
तनै अध घायल कर डालै
वार तलवार का करै छै सारा मंतरी
वायदा की लगावै झूठी डाल
तू कुकड़ू.....

आँसू भी पड़ै छै थानै उधारी में लैणा
ब्याज पे भी ब्याज पड़ै वोट पड़ै दैणा
पहलै तो पड़ै छा वोट पाँच पाँच साल में
अबै साल की साल
तू कुकड़ू.....

कर बंद जुबाँ की बाणी
यूँ जी लै रे जिंदगाणी
बच पावै नहीं थारा अंडा
कर बैठ अस्या हथकंडा
कैंया रेवे जिंदगाणी चंगा
उठतै ही मिलै अठै दंगा
थारा ही तो खून में गले छै मारी मुर्गी
नित खाबा की दाल
तू कुकड़ू.....

बुराँ की बुराई तू ज्यो कर नहीं पायैगी
घुट घुट जियेगी र् बछैड़ाई खायैगी
अस्यौ जीबो काँई जीबो बोल म्हारी मुर्गी
बाताँ मन की तू सामै ही निकाल
तू कुकड़ू.....

ठुमक मैं तो नाचूँगी

ठुमक मैं तो नाचूँगी नाचूँगी
मेरी सखियों के संग
मेरे दिल में उमंग है भरी
सहेली मेरे दिल में उमंग है भरी

सखियों के संग संग
शाला मैं जाऊँगी
सखियों के संग संग
पढ़ने मैं जाऊँगी
ऐसी लगन मोहे लागी रे
हाँ हाँ लागी रे हो हो लागी रे
वो तो लागी लागी लागी लागी लागी रे
मेरी सखियों.....

सखियों के संग संग
साइकिल चलाऊँगी
सखियों के संग संग
पतंग उड़ाऊँगी
ऐसी आशायें अब जागी रे
हाँ हाँ जागी रे हो हो जागी रे
वो तो जागी जागी जागी जागी जागी रे
मेरी सखियों.....

सखियों के संग संग
सपने सजाऊँगी
सखियों के संग संग
नाचूँगी गाऊँगी
प्यार की बंसी अब बाजी रे
हाँ हाँ बाजी रे हो हो बाजी रे
वो तो बाजी बाजी बाजी बाजी बाजी रे
मेरी सखियों.....

- **वाचा प्रस्तुति**

हम हैं किशोरी

हम हैं किशोरी हम है जहाँ
खुशियाँ ही खुशियाँ लायेंगे वहाँ
सुन री सहेली हम हैं किशोरी
चल रहा देखो हमारा कारवाँ
दूर है मंजिल चलना जरूरी
मिल के बनायेंगे रंगीन आसमाँ
हम हैं....

हमारे दिल में उमंगे हजार
होगा हमारा भी सपना साकार
सुन री सहेली नहीं तू अकेली
संग ले के चलेंगे सारी सखियाँ
हम हैं....

मुड़ के न देख आगे ही बढ़ना
जहाँ को दिखायेंगे हमारी खूबियाँ
सुनहरी सुबह में भरेंगे उड़ान
दुनिया को देंगे नयी पहचान
हम हैं....

- **वाचा प्रस्तुति**

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसके, यह गुलिस्ताँ हमारा.

गुरबत में हो अगर हम,
रहता है दिल वतन में,
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा.

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का
वो संतरी हमारा, वो पासवाँ हमारा.

गोदी में खेलती हैं, जिसके हजारों नदियाँ,
गुलशन हो जिसके दम से,
रश्के जिनाँ हमारा.

अय आबरूदे गंगा, वो दिन है याद तुझको,
उतरा तेरे किनारे, जब कारवाँ हमारा.

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्ताँ हमारा.

यूनानो मिस्रों रूमाँ सब मिट गये जहाँ से
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा.

'इकबाल' कोई मरहम,
अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को, दर्दे निहाँ हमारा.

उठाओ कलम

उठाओ कलम सर कलम हो रहे हैं,
धुआँधार जुल्मों सितम हो रहे हैं.

लिखो राष्ट्र क्षमता की आँखे भरी क्यों
कलुष की कथा कत्ल गारतगरी क्यों
मजहबी दरिन्दों को हथियार देकर
गुनहगार पूँजी की बाजीगरी क्यों
समय खो न जाये
गला भर ना आये
जगाओ जो दिन में पड़े सो रहे हैं.
उठाओ कलम....

जरा देखिये इसके आधार क्या हैं
मुजरिम सियासत के व्यापार क्या हैं
बदलनी है धरती से धन की प्रणाली
हमारे तुम्हारे सरोकार क्या हैं
बोते हैं हम तुम फसल जिंदगी की
ये रोटी के दुश्मन धरम बो रहे हैं.
उठाओ कलम....

कलम के लिये देश परदेश क्या है,
कलम का हमेशा से संदेश क्या है,
गिरों को उठाओ जमाने को बदलो,
अदब की हकीकत पशोपेश क्या है,
कलम के लिये भ्रम की जंजीर तोड़ो,
जमाने के आखर गरम हो रहे हैं.
उठाओ कलम....

- **शील**

सरफरोशी की तमन्ना

सरफरोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना
बाजुए कातिल में है.

ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत
मैं तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत का चर्चा
गैर की महफिल में है.

रहबरे-राह-मुहब्बत
रह न जाना राह में
लज्जते-सहराने-वर्दी
दूरिये मंजिल में है.

वक्त आने दे बता देंगे
तुझे ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बतायें
क्या हमारे दिल में है.

आज फिर मकतल में
कातिल कह रहा है बार बार
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी
किसी के दिल में है.

खींच कर लायी है हमको
कत्ल होने की उम्मीद
आशिकों का आज जमघट
कूचा-ए-कातिल में है.

अब न अगले वलवले हैं
और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत
अब दिले बिस्मिल में है.

▪ **रामप्रसाद बिस्मिल**

हम दीवानों की क्या हस्ती

हम दीवानों की क्या हस्ती
आज यहाँ चले कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला
हम धूल उड़ाते जहाँ चले.

आये बन कर उल्लास अभी
आँसू बन कर बह चले अभी
सब कहते ही रह गये, अरे
तुम कैसे आये कहाँ चले ?

किस ओर चले ये मत पूछो
चलना है बस इसलिये चले
जग से उसका कुछ लिये चले
जग को उसका कुछ दिये चले.

दो बात कही, दो बात सुनी
कुछ हँसे और कुछ रोये
छक कर सुख दुःख के घूँटों को
हम एक भाव से पिये चले

हम भिखमंगों की दुनिया में
स्वच्छन्द लुटा कर प्यार चले
हम एक निशानी-सी ले उर पर
ले असफलता का भार चले.

हम मान रहित अपमान रहित
जी भर कर खुल कर खेल चुके
हम हँसते हँसते आज यहाँ
प्राणों की बाजी हार चले.

हम भला बुरा सब भूल चुके
नत मस्तक हो मुँह मोड़ चले
अभिशाप उठा कर होठों पर
वरदान दृगों में छोड़ चले.

अब अपना क्या पराया क्या?
आबाद रहें रूकने वाले
हम स्वयँ बँधे थे और स्वयँ,
हम अपने बँधन तोड़ चले.

चंदा मामा आना तुम

चंदा मामा आना तुम
संग संग मुस्काना तुम
सारी दुनिया घूमघाम कर
खबरें रोज सुनाना तुम.

हम धरती के नन्हें तारे
बोलें प्यार की बोली
देखो तो ये लोग हैं कैसे
खेलें खून की होली
हमें न बाँटो - ओ ओ SSSSSSSS
हमें न बाँटो जात पाँत में,
आ कर इन्हें बतलाना तुम. चंदा.....

देखो मामा मम्मी कहती,
लोग यहाँ पर हैं बुद्धू
हमको कहते हिन्दू मुस्लिम
हम तो केवल हैं गुड्डू
सारी दुनिया खुदा का घर है,
आ कर इन्हें समझाना तुम. चंदा...

अब तो मामा एक है चिन्ता
पढ़-लिख कर बेकार बनेंगे
जब तक मिल ना चाकरी
पापा की फटकार सुनेंगे
अपने देश में लगा के रखना
कोई कल कारखाना तुम. चंदा...

बच्चों की सरकार बने तो
राष्ट्रपति बन जाना तुम
एक है विनती कोई मंत्री
मुझको भी बनवाना तुम
जो भी बढ़ाये दूध की कीमत
लेना रे हरजाना तुम. चंदा...

सौ में सत्तर आदमी

सौ में सत्तर आदमी
फिलहाल जब नाशाद है
दिल पर रख कर हाथ
कहिये देश क्या आजाद है.

कोठियों से मुल्क की
मैयार को मत आँकिये
असली हिन्दुस्तान तो
फुटपाथ पर आबाद है. सौ में....

सत्ताधारी लड़ पड़े हैं
आज कुत्तों की तरह
सूखी रोटी देख कर हम
मुफलिसों के हाथ में. सौ में....

जो मिटा पाया न अब तक,
भूख के अवसाद को
खत्म कर दो आज इस
मफलूस पूँजीवाद को. सौ में....

बूढ़ा बरगद साक्षी है
इस गाँव की चौपाल पर
रमसुदी की झोंपड़ी भी
ढह गयी चौपाल में. सौ में....

जिस शहर के मुन्तजिम
अन्धे हो जलवागाह के
उस शहर में रोशनी की
बात बेबुनियाद है. सौ में....

जो उलझ कर रह गयी है
फाइलों के जाल में
रोशनी वो गाँव तक
पहुँचेगी कितने साल में. सौ में....

▪ **अदम गोंदवी**

मशालें ले कर चलना

मशालें ले कर चलना
जब तक रात बाकी है
सँभल कर हर कदम रखना,
जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

मिले मंसूर को सूली
जहर सुकरात के हिस्से
रहेगा जुर्म सच कहना
जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

पसीने की तो तुम छोड़ो
लहू मजदूर का यारों
सस्ता पानी से रहेगा
जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

जब तक रहेंगे सवार
हर महफिल पे उल्लू ही
पपीहे की सुनेगा कौन

जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

झुका सर को तू मंदिर में
या मस्जिद में तू कर सजदा,
तेरे गम ना होंगे कम
जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

तेरे मस्तक पर होगा हर
पल विद्रोह का निशाँ
नहीं ये जोश कम होगा
जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

अँधेरों की अदालत में,
है क्या फरियाद का फायदा,
तू कर संग्राम ऐ साथी
जब तक रात बाकी है. मशालें ले.....

नयी जिंदगी

नयी जिंदगी है नयी है सदायें
नये गीत गाते चले जा रहे हैं
नयी रोशनी है नयी है हवायें
नये गुल खिलाते चले जा रहे हैं.
नयी जिंदगी .....

हुई आज की कहानी पुरानी
लहू की तरंगों में उठती जवानी
नयी रागिनी नयी ताल धुन में
नये स्वर मिलाते चले जा रहे हैं.
नयी जिंदगी .....

मिटाते हैं हम चालबाजों की हस्ती
बसाते हैं हम नौनिहालों की बस्ती
बहादुरों सपूतों की धरती हमारी
नये घर बनाते चले जा रहे हैं.
नयी जिंदगी.....

हमीं जिंदगी जिंदगी हक हमारा
हमारे ही श्रम से है जीवन की धारा
सियासी बलाओं को धुनते मसलते
नये पग बढ़ाते चले जा रहे हैं.
नयी जिंदगी.....

नहीं दूर हम से फसानों की मंजिल
जहाँ भी है हम रह सकेंगे न कातिल
जमीं आसमाँ ही नहीं हर जगह हम
नक्कारा बजाते चले जा रहे हैं.
नयी जिंदगी.....